भारत का धरातलीय स्वरूप

किसी स्थान के धरातलीय स्वरूप के निर्माण में वहाँ की भूआकृति और उसकी संरचना का प्रभाव होता है। भारत में अत्यधिक धरातलीय विभिन्नताएँ पायी जाती हैं जो यहाँ की भूआकृति और उसकी संरचना प्रक्रिया का परिणाम है। इसके उत्तर में हिमालय पर्वत श्रृंखलाएँ हैं, जिसमें अनेकों चोटियाँ घाटियाँ व खड्ड हैं। दक्षिण भारत एक स्थिर परंतु कटा-फटा पठार है जहाँ अपरदित चट्टान खंड और कगारों की बहुलता है। इन दोनों के बीच उत्तर भारत का विशाल मैदान है।

भारत को निम्नलिखित भूआकृतिक खंडों में बाँटा जा सकता है।

1. उत्तर तथा उत्तरी-पूर्वी पर्वतमाला
2. उत्तरी भारत का मैदान
3. प्रायद्वीपीय पठार
4. भारतीय मरुस्थल
5. तटीय मैदान
6. द्वीप समूह

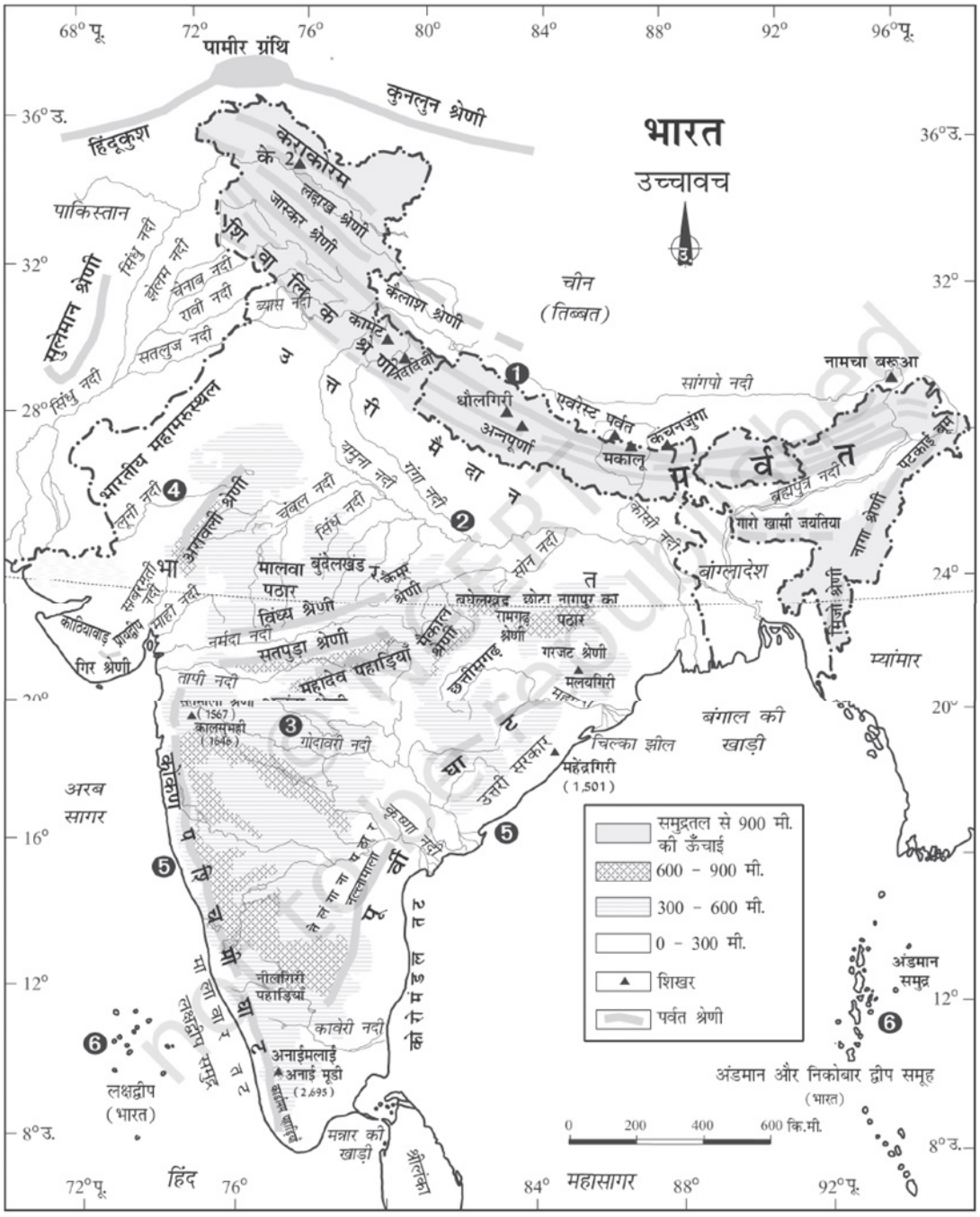

भारत
उच्चावच
उ
68° पू.
72°
76°
80°
84°
88°
92°
96° पू.
36° उ.
32°
28°
24°
20°
16°
12°
8° उ.
पामीर ग्रंथि
कुनलुन श्रेणी
हिंदूकुश
काराकोरम
के 2
लद्दाख श्रेणी
जास्कर श्रेणी
शिवालिक श्रेणी
पाकिस्तान
सुलेमान श्रेणी
सिंधु नदी
झेलम नदी
चेनाब नदी
रावी नदी
व्यास नदी
सतलुज नदी
कैलाश श्रेणी
चीन
(तिब्बत)
कामेट
नंदादेवी
धौलगिरी
अन्नपूर्णा
एवरेस्ट पर्वत
मकालू
कंचनजुंगा
सांगपो नदी
नामचा बरूआ
उत्तरी मैदान
भारतीय महामरुस्थल
लूनी नदी
अरावली श्रेणी
चंबल नदी
सिंध नदी
यमुना नदी
गंगा नदी
कोसी नदी
सोन नदी
ब्रह्मपुत्र नदी
पटकाई बूम
गारो खासी जयंतिया
नागा श्रेणी
मिजो श्रेणी
बांग्लादेश
म्यांमार
मालवा पठार
बुंदेलखंड
कैमूर श्रेणी
बघेलखंड
छोटा नागपुर का पठार
रामगढ़ श्रेणी
विंध्य श्रेणी
सबरमती नदी
माही नदी
काठियावाड़ प्रायद्वीप
गिर श्रेणी
नर्मदा नदी
सतपुड़ा श्रेणी
मैकाल श्रेणी
महादेव पहाड़ियाँ
गरजट श्रेणी
छत्तीसगढ़
मलयगिरी
तापी नदी
(1567)
कालसुभाई
(1646)
गोदावरी नदी
प्रायद्वीपीय पठार
चिल्का झील
महेंद्रगिरी
(1,501)
उत्तरी सरकार
बंगाल की खाड़ी
अरब सागर
कोंकण
पश्चिमी घाट
पूर्वी घाट
कृष्णा नदी
नल्लामाला
कोरोमंडल तट
मालाबार तट
नीलगिरी पहाड़ियाँ
कावेरी नदी
अनाईमलाई
अनाई मुडी
(2,695)
कार्डामम पहाड़ियाँ
लक्षद्वीप सागर
लक्षद्वीप
(भारत)
मन्नार की खाड़ी
श्रीलंका
अंडमान सागर
अंडमान और निकोबार द्वीप समूह
(भारत)
हिंद महासागर
समुद्रतल से 900 मी. की ऊँचाई
600 - 900 मी.
300 - 600 मी.
0 - 300 मी.
शिखर
पर्वत श्रेणी
0
200
400
600 कि.मी.
1
2
3
4
5
6

1. उत्तर तथा उत्तरी-पूर्वी पर्वतमाला

उत्तर तथा उत्तरी-पूर्वी पर्वतमाला में हिमालय पर्वत और उत्तरी-पूर्वी पहाड़ियाँ शामिल हैं। हिमालय में कई समानांतर पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। इसमें ट्रांस हिमालय, बृहत हिमालय, मध्य हिमालय और शिवालिक प्रमुख श्रेणियाँ हैं। भारत के उत्तरी-पश्चिमी भाग में हिमालय की ये श्रेणियाँ उत्तर-पश्चिम दिशा से दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर फैली हैं। दार्जलिंग और सिक्किम क्षेत्रों में ये श्रेणियाँ पूर्व-पश्चिम दिशा में फैली हैं जबकि अरुणाचल प्रदेश में ये दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पश्चिम की ओर घूम जाती हैं। मिजोरम, नागालैंड और मणिपुर में ये पहाड़ियाँ उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हैं।

ट्रांस हिमालय

यह महान में हिमालय का उत्तरी भाग है । इसके अंतर्गत काराकोरम , लद्दाख , जास्कर आदि पर्वत श्रेणियाँ आती हैं । जिनका निर्माण हिमालया से पहले हो चुका था । k2 गार्डविन 8611 मीटर आस्टिन काराकोरम श्रेणी की सर्वोच्च चोटी है

बृहत हिमालय

- बृहत हिमालय श्रृंखला, जिसे केंद्रीय श्रेणी भी कहा जाता है, की पूर्व-पश्चिम लंबाई लगभग 2500 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण इसकी चौड़ाई 160 से 400 किलोमीटर है।
- हिमालय, भारतीय उपमहाद्वीप तथा मध्य एवं पूर्वी एशिया के देशों के बीच एक विभाजक के रूप में खड़ा है।
- हिमालय एक प्राकृतिक अवरोधक ही नहीं अपितु जलवायु, अपवाह और सांस्कृतिक विभाजक भी है।

- सबसे उत्तरी भाग में स्थित श्रृंखला को महान या आंतरिक हिमालय या हिमाद्रि कहते हैं ।
- यह सबसे अधिक सतत् श्रृंखला है , जिसमें 6,000 मीटर की औसत ऊँचाई वाले सर्वाधिक ऊँचे शिखर हैं ।
- बृहत हिमालय में विश्व के प्रायः सभी महत्वपूर्ण शिखर स्थित हैं। इनमें एवरेस्ट 8848 मीटर , कंचनजंघा 8598 मीटर, नंगापर्वत 8126 मीटर, नंदादेवी 7817 मीटर, कामेत 7756 मीटर व नामचाबरवा 7782 मीटर। विश्व की सबसे ऊची चोटी माउंट एवरेस्ट बृहत हिमालय में स्थित है।

- महान हिमालय के वलय की प्रकृति असममित है ।
- हिमालय के इस भाग का क्रोड ग्रेनाइट का बना है ।
- यह श्रृंखला हमेशा बर्फ से ढँकी रहती है तथा इससे बहुत सी हिमानियों का प्रवाह होता है ।

लघु हिमालय

- हिमाद्रि के दक्षिण में स्थित श्रृंखला सबसे अधिक असम है एवं हिमाचल या निम्न हिमालय के नाम से जानी जाती है ।
- इन श्रृंखलाओं का निर्माण मुख्यतः अत्याधिक संपीडित तथा परिवर्तित शैलों से हुआ हैं ।
- इनकी ऊँचाई 3,700 मीटर से 4,500 मीटर के बीच तथा औसत चौड़ाई 50 किलोमीटर है ।
- जबकि पीर पंजाल श्रृंखला सबसे लंबी तथा सबसे महत्त्वपूर्ण श्रृंखला है , धौलाधर एवं महाभारत श्रृंखलाएँ भी महत्त्वपूर्ण हैं ।
- इसी श्रृंखला में कश्मीर की घाटी तथा हिमाचल के कांगड़ा एवं कुल्लू की घाटियाँ स्थित हैं ।
- इस क्षेत्र को पहाड़ी नगरों के लिए जाना जाता है ।
- इसी श्रृंखला में अल्पाइन चरागाह भी पाये जाते हैं , जिन्हे कश्मीर की घाटी में मर्ग (गुलमर्ग , सोनमर्ग) तथा उत्तराखंड में बुग्याल या पयार कहा जाता है।

शिवालिक

- हिमालय की सबसे बाहरी श्रृंखला को शिवालिक कहा जाता है ।
- इनकी चौड़ाई 10 से 50 किमी. तथा ऊँचाई 900 से 1,100 मीटर के बीच है ।
- यह हिमालय की सबसे नवीन पर्वत श्रेणी है ।
- यह श्रृंखलाएँ , उत्तर में स्थित मुख्य हिमालय की श्रृंखलाओं से नदियों द्वारा लायी गयी असंपिडित अवसादों से बनी है ।
- यह घाटियाँ बजरी तथा जलोढ़ की मोटी परत से ढँकी हुई हैं ।

- निम्न हिमाचल तथा शिवालिक के बीच में स्थित लंबवत् घाटी को दून के नाम से जाना जाता है ।
- कुछ प्रसिद्ध दून हैं – देहरादून , कोटलीदून एवं पाटलीदून ।

हिमालय को पश्चिम से पूर्व तक स्थित क्षेत्रों के आधार पर भी विभाजित किया गया है । इन वर्गीकरणों को नदी घाटियों की सीमाओं के आधार पर किया गया है ।

- सिंधु एवं सतलुज के बीच स्थित हिमालय के भाग को पंजाब हिमालय या कश्मीर हिमालय के नाम से जाना जाता है ।
- सतलुज तथा काली नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को कुमाँऊ हिमालय के नाम से भी जाना जाता है ।
- काली तथा तिस्ता नदियों के बीच स्थित हिमालय के भाग को नेपाल हिमालय के नाम से जाना जाता है ।
- तिस्ता तथा दिहांग नदियाँ असम हिमालय का सीमांकन करती है ।

पंजाब हिमालय या कश्मीर हिमालय

कश्मीर हिमालय में अनेक पर्वत श्रेणियाँ हैं, जैसे- कराकोरम, लद्दाख, जांस्कर और पीरपंजाल। कश्मीर हिमालय का उत्तरी-पूर्वी भाग, जो बृहत हिमालय और कराकोरम श्रेणियों के बीच स्थित है, एक ठंडा मरुस्थल है। बृहत हिमालय और पीरपंजाल के बीच विश्व प्रसिद्ध कश्मीर घाटी और डल झील हैं। दक्षिण एशिया की महत्त्वपूर्ण हिमानी नदियाँ बलटारो और सियाचिन इसी प्रदेश में हैं।

बृहत हिमालय में जोजीला, पीर पंजाल में बानिहाल, जास्कर श्रेणी में फोटुला और लद्दाख श्रेणी में खर्दुंगला जैसे महत्त्वपूर्ण दर्रे स्थित हैं। महत्त्वपूर्ण अलवणजल की झीलें, जैसे - डल और वुलर तथा लवणजल झीलें, जैसे- पैंगोंग सो (Pangong Tso) और सो मुरीरी (Tso Muriri) भी इसी क्षेत्र में पाई जाती हैं। सिंधु तथा इसकी सहायक नदियाँ, झेलम और चेनाब, इस क्षेत्र को अपवाहित करती हैं।
प्रदेश के दक्षिणी भाग में अनुदैर्ध्य (longitudinal) घाटियाँ पाई जाती है जिन्हें दून कहा जाता है। इनमें जम्मू-दून और पठानकोट-दून प्रमुख हैं।

कुमाँऊ हिमालय

हिमालय का यह हिस्सा पश्चिम में सतलज नदी और पूर्व में काली (घाघरा की सहायक नदी) के बीच स्थित है। यह भारत की दो मुख्य नदी तंत्रों, सिंधु और गंगा द्वारा अपवाहित है। इस प्रदेश के अंदर बहने

वाली नदियाँ रावी, ब्यास और सतलुज (सिंधु की सहायक नदियाँ) और यमुना और घाघरा (गंगा की सहायक नदियाँ) हैं।

हिमाचल हिमालय का सुदूर उत्तरी भाग लद्दाख के ठंडे मरुस्थल का विस्तार है और यह लाहौल एवं स्पिति जिले में तक फैला है। हिमालय की तीनों मुख्य पर्वत श्रृंखलाएँ, बृहत हिमालय, लघु हिमालय (जिन्हें हिमाचल में धौलाधर और उत्तराखण्ड में नागतीभा कहा जाता है) और उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली शिवालिक श्रेणी, इस हिमालय खंड में स्थित हैं।

लघु हिमालय में 1000 से 2000 मीटर ऊँचाई वाले पर्वत मुख्य आकर्षण के केंद्र हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण पर्वतीय नगर, जैसे - धर्मशाला, मसूरी, कासौली, अल्मोंड़ा, लैंसडाउन और रानीखेत इसी क्षेत्र में स्थित हैं।

इस क्षेत्र की दो महत्त्वपूर्ण स्थलाकृतियाँ शिवालिक और दून हैं। यहाँ स्थित कुछ महत्त्वपूर्ण दून, चंडीगढ़-कालका का दून, नालागढ़ दून, देहरादून, हरकी दून तथा कोटदून शामिल हैं। इनमें देहरादून सबसे बड़ी घाटी है, जिसकी लंबाई 35 से 45 किलोमीटर और चौड़ाई 22 से 25 किलोमीटर है।

गंगोत्री, यमुनोत्री , केदारनाथ, बद्रीनाथ और हेमकुंड साहिब बृहत हिमालय स्थित हैं। प्रसिद्ध 'फूलों की घाटी' भी इसी पर्वतीय क्षेत्र में स्थित है। इस क्षेत्र में पाँच प्रसिद्ध प्रयाग (नदी संगम) हैं।

नेपाल हिमालय

यह काली तथा तिस्ता नदियों के मध्य 800 किमी. की लम्बाई में फैला है । यह एक छोटा परंतु हिमालय का बहुत महत्त्वपूर्ण भाग है। यहाँ माउंट एवरेस्ट,कंचनजंघा तथा मकालू जैसी ऊँची चोटियाँ और गहरी घाटियाँ पाई जाती हैं। तेज बहाव वाली तिस्ता नदी इसी क्षेत्र से बहती है। हिमालय के अन्य क्षेत्रों से यह क्षेत्र भिन्न है क्योंकि यहाँ द्वार या दुआर नामक विशेष स्थलाकृतियाँ पाई जाती हैं।

असम हिमालय

यह पर्वत क्षेत्र भूटान हिमालय से लेकर पूर्व में डिफू दर्रे तक फैला है। इस पर्वत श्रेणी की सामान्य दिशा दक्षिण-पूर्व से उत्तर-पूर्व है। तिस्ता तथा दिहांग नदियाँ असम हिमालय का सीमांकन करती है । इस क्षेत्र की मुख्य चोटियों में काँगतु और नमचाबरवा शामिल है। ये पर्वत श्रेणियाँ उत्तर से दक्षिण दिशा में तेज बहती हुई और गहरे गॉर्ज बनाने वाली नदियों द्वारा विच्छेदित होती हैं। नामचाबरवा को पार करने के बाद बह्मपुत्रा नदी एक गहरी गॉर्ज बनाती है। कामेंग, सुबनसरी, दिहांग, दिबाँग और लोहित यहाँ की प्रमुख नदियाँ हैं। यह बारहमासी नदियाँ हैं और बहुत से जल-प्रपात बनाती हैं।

पूर्वी पहाड़ियाँ और पर्वत

हिमालय पर्वत के इस भाग में पहाड़ियों की दिशा उत्तर से दक्षिण है। ये पहाड़ियाँ विभिन्न स्थानीय नामों से जानी जाती है। उत्तर में ये पटकाई बम, नागा पहाड़ियाँ, मणिपुर पहाड़ियाँ और दक्षिण में मिशो या लुसाई पहाड़ियों के नाम से जानी जाती हैं। यह एक नीची पहाड़ियों का क्षेत्र है। यहाँ ज्यादातर पहाड़ियाँ, छोटे-बड़े नदी-नालों द्वारा अलग होती हैं। बराक मणिपुर और मिजोरम की एक मुख्य नदी है। मणिपुर घाटी के मध्य एक झील स्थित है जिसे 'लोकताक' झील कहा जाता है और यह चारों ओर से पहाड़ियों से घिरी है। मिजोरम जिसे 'मोलेसिस बेसिन' भी कहा जाता है कोमल और असंगठित चट्टानों से बना है। नागालैंड में बहने वाली ज्यादातर नदियाँ बह्मपुत्रा नदी की सहायक नदियाँ हैं। मिजोरम और मणिपुर की दो नदियाँ बराक नदी की सहायक नदियाँ हैं, जो मेघना नदी की एक सहायक नदी है। मणिपुर के पूर्वी भाग में बहने वाली नदियाँ चिंदविन नदी की सहायक नदियाँ है जो कि म्यांमार में बहने वाली इरावदी नदी की एक सहायक नदी है।

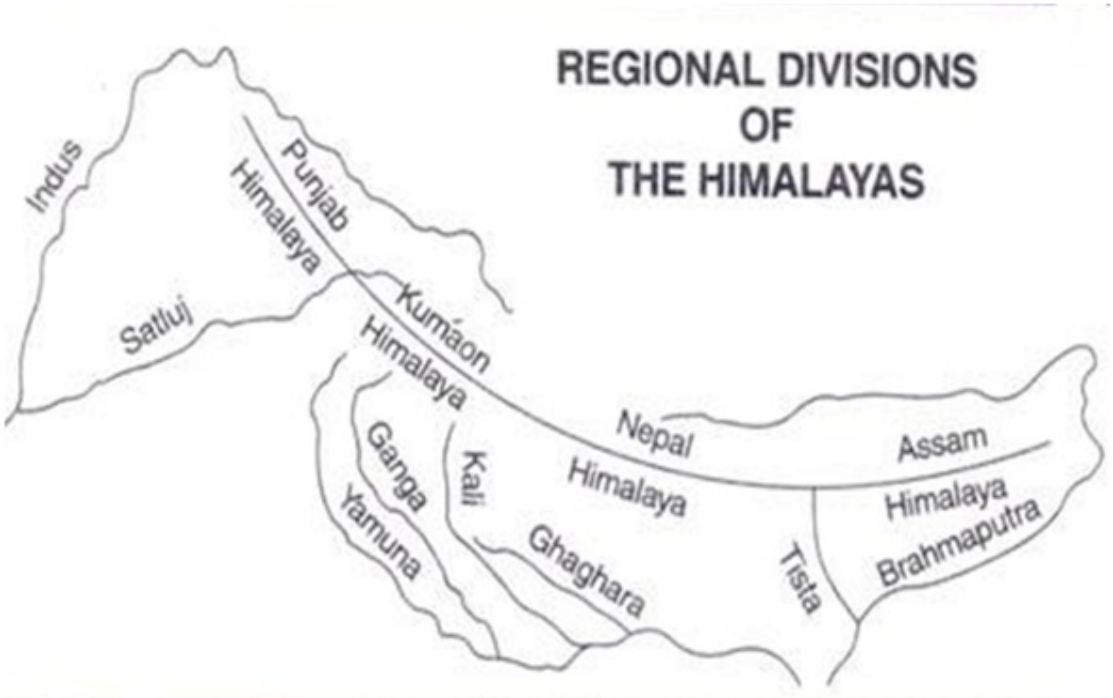

2. उत्तरी भारत का मैदान

उत्तरी भारत का मैदान सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्रा नदियों द्वारा बहाकर लाए गए जलोढ़ निक्षेप से बना है। इस मैदान की पूरब से पश्चिम लंबाई लगभग 3200 किलोमीटर है। इसकी औसत चौड़ाई 150 से 300 किलोमीटर है। जलोढ़ निक्षेप की अधिकतम गहराई 1000 से 2000 मीटर है। उत्तर से दक्षिण दिशा में इन मैदानों को तीन भागों में बाँट सकते हैं भाभर, तराई और जलोढ़ मैदान। जलोढ़ मैदान को आगे दो भागों में बाँटा जाता है – खादर और बाँगर।

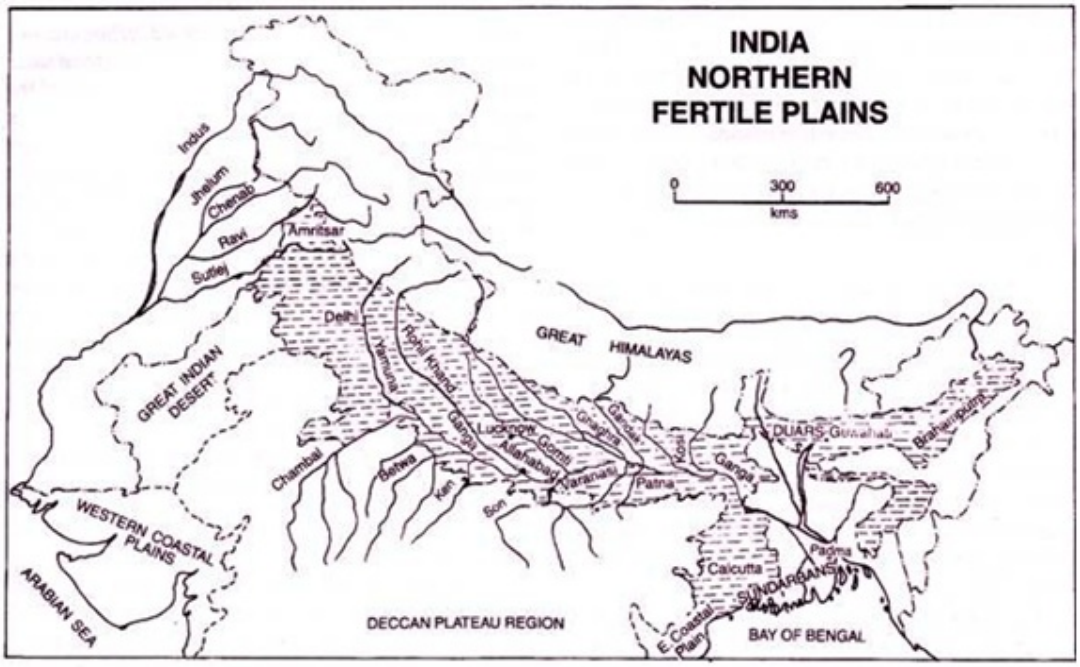

Northern Plains

भाभर क्षेत्र

- भाभर 8 से 10 किलोमीटर चौड़ाई की पतली पट्टी है जो शिवालिक पहाड़ियों के समानांतर फैली हुई है।
- हिमालय पर्वत श्रेणियों से बाहर निकलती नदियाँ यहाँ पर भारी जल-भार, जैसे- बड़े शैल और गोलाश्म जमा कर देती हैं और कभी-कभी स्वयं इसी में लुप्त हो जाती हैं।

तराई क्षेत्र

- भाभर के दक्षिण में तराई क्षेत्र है जिसकी चौड़ाई 10 से 20 किलोमीटर है।

- भाभर क्षेत्र में लुप्त नदियाँ इस प्रदेश में धरातल पर निकल कर प्रकट होती हैं।
- यह क्षेत्र प्राकृतिक वनस्पति से ढका रहता है।

बाँगर क्षेत्र

- तराई से दक्षिण में मैदान है जो पुराने जलोढ़ से बना होने के कारण बाँगर कहलाता है।
- पुराने जलोढ़ से निर्मित बाँगर प्रदेश में कंकड़ व रेत अधिक मात्रा में पाये जाते है ।
- इस प्रदेश में कंकड़ पत्थरों के कारण असमतल व उच्च भूमि बन गयी है जिसे स्थानीय नाम भूड़ दिया गया है

खादर क्षेत्र

- नए जलोढ़ से बना क्षेत्र खादर कहलाता है।
- यहाँ बाढ़ द्वारा प्रत्येक वर्ष नई उर्वरक मिट्टी आती है ।
- इस प्रदेश को कछारी प्रदेश या बाढ़ का मैदान भी कहते है।
- खादर प्रदेश का विस्तार डेल्टा प्रदेश के रूप में हुआ है ।

ब्रह्मपुत्रा घाटी का मैदान नदीय द्वीप और बालू-रोधिकाओं की उपस्थिति के लिए जाना जाता है। यहाँ ज्यादातर क्षेत्र में समय-समय पर बाढ़ आती रहती है और नदियाँ अपना रास्ता बदल कर गुंपिफत वाहिकाएँ बनाती रहती हैं। उत्तर भारत के मैदान में बहने वाली विशाल नदियाँ अपने मुहाने पर बड़े-बड़े डेल्टाओं का निर्माण करती हैं, जैसे - सुंदर वन डेल्टा। सामान्य तौर पर यह एक सपाट मैदान है जिसकी समुद्र तल से औसत ऊँचाई 50 से 100 मीटर है। हरियाणा और दिल्ली राज्य सिंधु और गंगा नदी तंत्रों के बीच जल-विभाजक है। ब्रह्मपुत्र नदी अपनी घाटी में उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम दिशा में बहती है। परंतु बांग्लादेश में प्रवेश करने से पहले धुबरी के समीप यह नदी दक्षिण की ओर 90° पर मुड़ जाती है। यह मैदान उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से बने हैं।

3. प्रायद्वीपीय पठार

नदियों के मैदान से 150 मीटर ऊँचाई से ऊपर उठता हुआ प्रायद्वीपीय पठार तिकोने आकार वाला कटा-फटा भूखंड है, जिसकी ऊँचाई 600 से 900 मीटर है। उत्तर पश्चिम में दिल्ली कटक (ridge); अरावली का विस्तार, पूर्व में राजमहल पहाड़ियाँ, पश्चिम में गिर पहाड़ियाँ और दक्षिण में कार्डामम पहाड़ियाँ, प्रायद्वीप पठार की सीमाएँ निर्धारित करती हैं। उत्तर-पूर्व में शिलांग तथा कार्बी-ऐंगलोंग पठार भी इसी भूखंड का विस्तार है।

प्रायद्वीपीय भारत अनेक पठारों से मिलकर बना है, जैसे - हजारीबाग पठार, पलामू पठार, रांची पठार, मालवा पठार, कोयेम्बटूर पठार और कर्नाटक पठार।

यह भारत के प्राचीनतम और स्थिर भूभागों में से एक है। सामान्य तौर पर प्रायद्वीप की ऊँचाई पश्चिम से पूर्व को कम होती चली जाती है, जिसका प्रमाण यहाँ की नदियों के बहाव की दिशा से भी मिलता है।

इस क्षेत्र की मुख्य प्राकृतिक स्थलाकृतियों में टॉर, ब्लॉक पर्वत, भ्रंश घाटियाँ, पर्वत स्कंध, नग्न चट्टान संरचना, टेकरी (hummocky) पहाड़ी शृंखलाएँ और क़ार्ट्जाइट भित्तियाँ (dykes) शामिल हैं जो प्राकृतिक जल संग्रह के स्थल हैं। इस पठार के पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग में मुख्य रूप से काली मिट्टी पाई जाती है।

प्रायद्वीपीय पठार के अनेक हिस्से भू-उत्थान व निमज्जन, भ्रंश तथा विभंग निर्माण प्रक्रिया के अनेक पुनरावर्ती दौर से गुजरे हैं। पुनरावर्ती भूकंपीय क्रियाओं की क्षेत्रीय विभिन्नता के कारण ही प्रायद्वीपीय

पठार पर धरातलीय विविधताएँ पाई जाती हैं। इस पठार के उत्तरी-पश्चिमी भाग में नदी खड्ड और महाखड्ड इसके धरातल को जटिल बनाते हैं। चंबल, भिंड और मुरैना खड्ड इसके उदाहरण हैं।

मुख्य उच्चावच लक्षणों के अनुसार प्रायद्वीपीय पठार को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

- दक्कन का पठार;
- मध्य उच्च भूभाग;
- उत्तरी-पूर्वी पठार;

दक्कन का पठार

दक्कन के पठार के पश्चिम में पश्चिमी घाट, पूर्व में पूर्वी घाट और उत्तर में सतपुड़ा, मैकाल और महादेव पहाड़ियाँ हैं। पश्चिमी घाट को स्थानीय तौर पर अनेक नाम दिए गए हैं, जैसे - महाराष्ट्र में सहयाद्रि, कर्नाटक और तमिलनाडु में नीलगिरि और केरल में अनामलाई और कार्डमम पहाड़ियाँ। पूर्वी घाट की तुलना में पश्चिमी घाट ऊँचे और अविरत हैं। इनकी औसत ऊँचाई लगभग 1500 मीटर है, जो कि उत्तर से दक्षिण की तरफ बढ़ती चली जाती है। प्रायद्वीपीय पठार की सबसे ऊंची चोटी अनाईमुडी (2695 मीटर) है, जो पश्चिमी घाट की अनामलाई पहाड़ियों में स्थित है। दूसरी सबसे ऊंची चोटी डोडाबेटा है। यह नीलगिरी पहाड़ियों में स्थित है।

ज्यादातर प्रायद्वीपीय नदियों की उत्पत्ति पश्चिमी घाट से है। पूर्वी घाट अविरत नहीं है। यह महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी नदियों द्वारा अपरदित हैं। यहाँ की कुछ मुख्य श्रेणियाँ जावादी पहाड़ियाँ, पालकोण्डा श्रेणी, नल्लामाला पहाड़ियाँ और महेंद्रगिरि पहाड़ियाँ हैं। पूर्वी और पश्चिमी घाट नीलगिरी पहाड़ियों में आपस में मिलते हैं।

मध्य उच्च भूभाग

पश्चिम में अरावली पर्वत इसकी सीमा बनाते हैं। इसके दक्षिण में सतपुड़ा पर्वत उच्छिष्ट पठार की श्रेणियों से बना हैं जिनकी समुद्रतल से ऊँचाई 600 से 900 मीटर है। ये दक्कन पठार की उत्तरी सीमा बनाते हैं। ये अवशिष्ट पर्वतों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो कि काफी हद तक अपरदित हैं और इनकी शृंखला टूटी हुई है। प्रायद्वीपीय पठार के इस भाग का विस्तार जैसलमेर तक है जहाँ यह अनुदैर्ध्य रेत के टिब्बों और चापाकार (बरखान) रेतीले टिब्बो से ढके हैं। अपने भूगर्भीय इतिहास में यह क्षेत्र कायांतरित प्रक्रियाओं से गुजर चुका है और कायांतरित चट्टानों, जैस - संगमरमर, स्लेट और नाइस की उपस्थिति इसका प्रमाण है। समुद्र तल से मध्य उच्च भूभाग की ऊँचाई 700 से 1000 मीटर के बीच है। उत्तर तथा उत्तर-पूर्व दिशा में इसकी ऊँचाई कम होती चली जाती है। यमुना की अधिकतर सहायक

नदियाँ विंध्याचल और कैमूर श्रेणियों से निकलती हैं। बनास, चंबल की एकमात्र मुख्य सहायक नदी है, जो पश्चिम में अरावली से निकलती है। मध्य उच्च भूभाग का पूर्वी विस्तार राजमहल की पहाड़ियों तक है जिसके दक्षिण में स्थित छोटा नागपुर पठार है।

उत्तर-पूर्व पठार

वास्तव में यह प्रायद्वीपीय पठार का ही एक विस्तारित भाग है। यह माना जाता है कि हिमालय उत्पत्ति के समय इंडियन प्लेट के उत्तर-पूर्व दिशा में खिसकने के कारण, राजमहल पहाड़ियों और मेघालय के पठार के बीच भ्रंश घाटी बनने से यह अलग हो गया था। बाद में यह नदी द्वारा जमा किए जलोढ़ द्वारा पाट दिया गया। आज मेघालय और कार्बी ऐंगलोंग पठार इसी कारण से मुख्य प्रायद्वीपीय पठार से अलग-थलग हैं।

मेघालय के पठार को तीन भागों में बाँटा गया है; गारो पहाड़ियाँ, खासी पहाड़ियाँ, जयंतिया पहाड़ियाँ। असम की कार्बी एंगगलोंग पहाड़ियाँ भी इसी का विस्तार है। छोटा नागपुर के पठार की तरह मेघालय का पठार भी खनिज पदार्थों का भंडार है। इस क्षेत्र में अधिकतर वर्षा दक्षिण-पश्चिमी मानसून से होती है। परिणामस्वरूप, मेघालय का पठार एक अति अपरदित चट्टानों से ढका है।

4. भारतीय मरुस्थल

विशाल भारतीय मरुस्थल अरावली पहाड़ियों से उत्तर-पूर्व में स्थित है। यह एक ऊबड़-खाबड़ भूतल है जिस पर बहुत से अनुदैर्ध्य रेतीले टीले और बरखान पाए जाते हैं। यहाँ पर वार्षिक वर्षा 150 मिलीमीटर से कम होती है और परिणामस्वरूप यह एक शुष्क और वनस्पति रहित क्षेत्र है। इन्ही स्थलाकृतिक गुणों के कारण इसे 'मरुस्थली' के नाम से जाना जाता है। यह माना जाता है कि मेसोजोइक काल में यह क्षेत्र समुद्र का हिस्सा था। लूनी इस क्षेत्र की प्रमुख नदी है।

5. तटीय मैदान

तटीय मैदान को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है। गुजरात का कच्छ और काठियावाड़ तट, महाराष्ट्र का कोंकण तट और गोवा तट, कर्नाटक तथा केरल के क्रमशः मालाबार तट। पश्चिमी तटीय मैदान मध्य में संकीर्ण है परंतु उत्तर और दक्षिण में चौड़े हो जाते हैं। इस तटीय मैदानों में बहने वाली नदियां डेल्टा नहीं बनाती हैं । पश्चिमी तटीय मैदान की तुलना में पूर्वी तटीय मैदान चौड़ा है और उभरे हुए तट का उदाहरण है। पूर्व की ओर बहने वाली और बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ यहाँ लम्बे-चौड़े डेल्टा बनाती हैं। इसमें महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी का डेल्टा शामिल है। उभरा तट होने के कारण यहाँ पत्तन और पोता श्रय कम हैं। पश्चिमी तटीय मैदान एक संकीर्ण पट्टी मात्र है और पत्तनों एवं बंदरगाह विकास के लिए प्राकृतिक परिस्थितियाँ प्रदान करता है। यहाँ पर स्थित प्राकृतिक बंदरगाहों में कांडला, मजगाँव, नावहा शेवा, मर्मागाओ, मैंगलौर, कोचीन शामिल हैं।

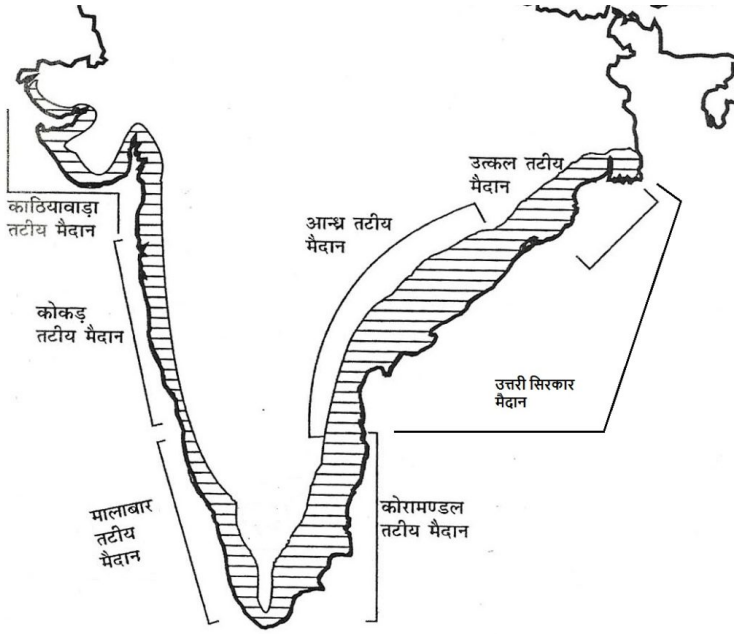

6. **द्वीप समूह**

भारत में दो प्रमुख द्वीप समूह हैं- एक बंगाल की खाड़ी में और दूसरा अरब सागर में। बंगाल की खाड़ी के द्वीप समूह में लगभग 572 द्वीप हैं। ये द्वीप 6° उत्तर से 14° उत्तर और 92° पूर्व से 94° पूर्व के बीच स्थित हैं। रीची द्वीप समूह और लबरीन्थ द्वीप, यहाँ के दो प्रमुख द्वीप समूह हैं। बंगाल की खाड़ी के द्वीपों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है- उत्तर में अंडमान और दक्षिण में निकोबार। ये द्वीप, समुद्र में जलमग्न पवर्तों का हिस्सा है। कुछ छोटे द्वीपों की उत्पत्ति ज्वालामुखी से भी जुड़ी है। बैरन आइलैंड नामक भारत का एकमात्रा जीवंत ज्वालामुखी भी निकोबार द्वीपसमूह में स्थित है। यह द्वीप असंगठित कंकड़, पत्थरों और गोलाश्मों से बना हुआ है। इस द्वीप समूह की मुख्य पर्वत चोटियों में सैडल चोटी उत्तरी अंडमान-738 मीटर, माउंट डियोवोली मध्य अंडमान-515 मीटर, माउंट कोयोब दक्षिणी अंडमान- 460 मीटर और माउंट थुईल्लर ग्रेट निकोबार- 642 मीटर शामिल हैं।

अरब सागर के द्वीपों में लक्षद्वीप और मिनिकॉय शामिल हैं। यह द्वीप 80° उत्तर से 12° उत्तर और 71° पूर्व से 74° पूर्व के बीच बिखरे हुए हैं। यह केरल तट से 280 किलोमीटर से 480 किलोमीटर दूर स्थित है। पूरा द्वीप समूह प्रवाल निक्षेप से बना है। यहाँ 36 द्वीप हैं और इनमें से 11 पर मानव आवास है। मिनिकॉय सबसे बड़ा द्वीप है जिसका क्षेत्रफल 453 वर्ग किलोमीटर है। यह द्वीप समूह 10 डिग्री चैनल द्वारा दो भागों में बाँटा गया है, उत्तर में अमीनी द्वीप और दक्षिण में कनानोरे द्वीप।

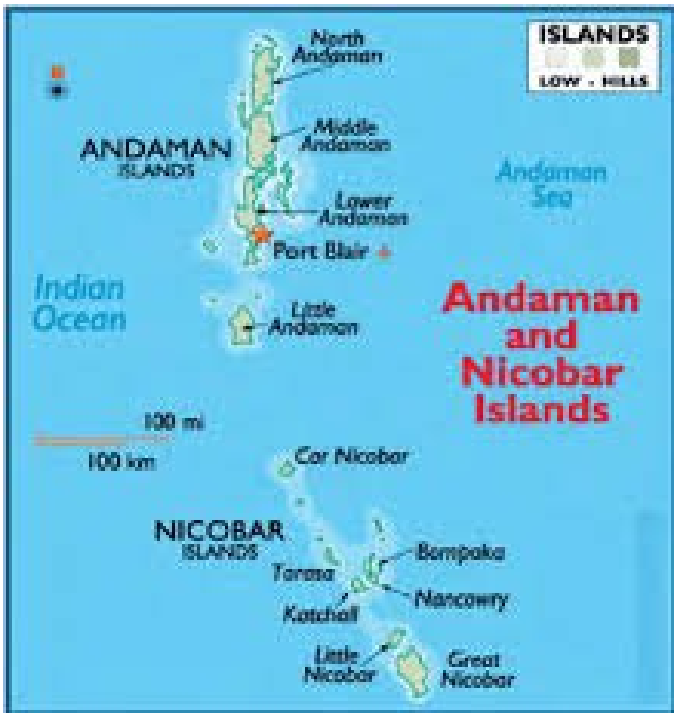

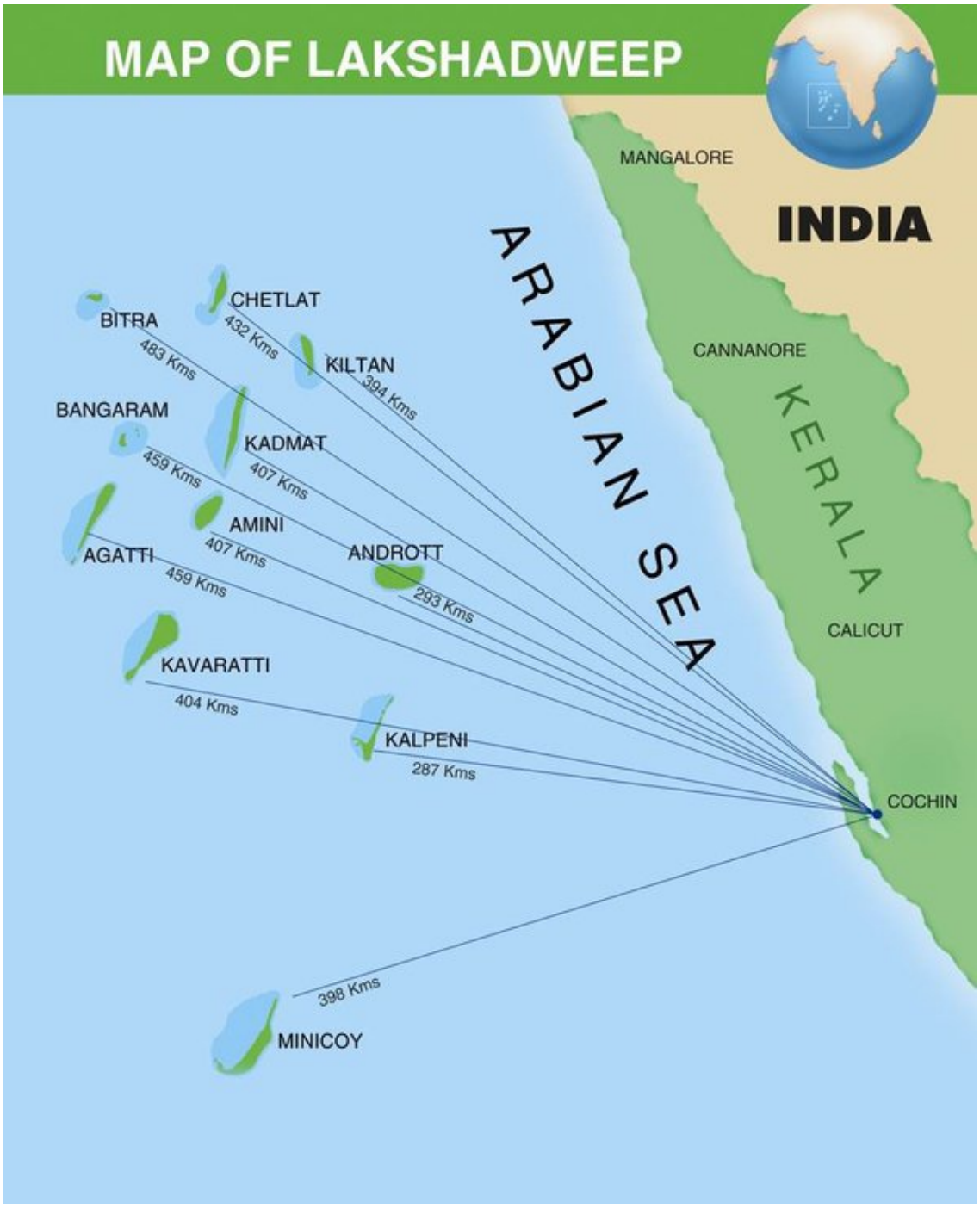
MAP OF LAKSHADWEEP
MANGALORE
INDIA
ARABIAN SEA
CANNANORE
KERALA
CALICUT
COCHIN
CHETLAT
432 Kms
BITRA
483 Kms
KILTAN
394 Kms
BANGARAM
459 Kms
KADMAT
407 Kms
AMINI
407 Kms
AGATTI
459 Kms
ANDROTT
293 Kms
KAVARATTI
404 Kms
KALPENI
287 Kms
398 Kms
MINICOY

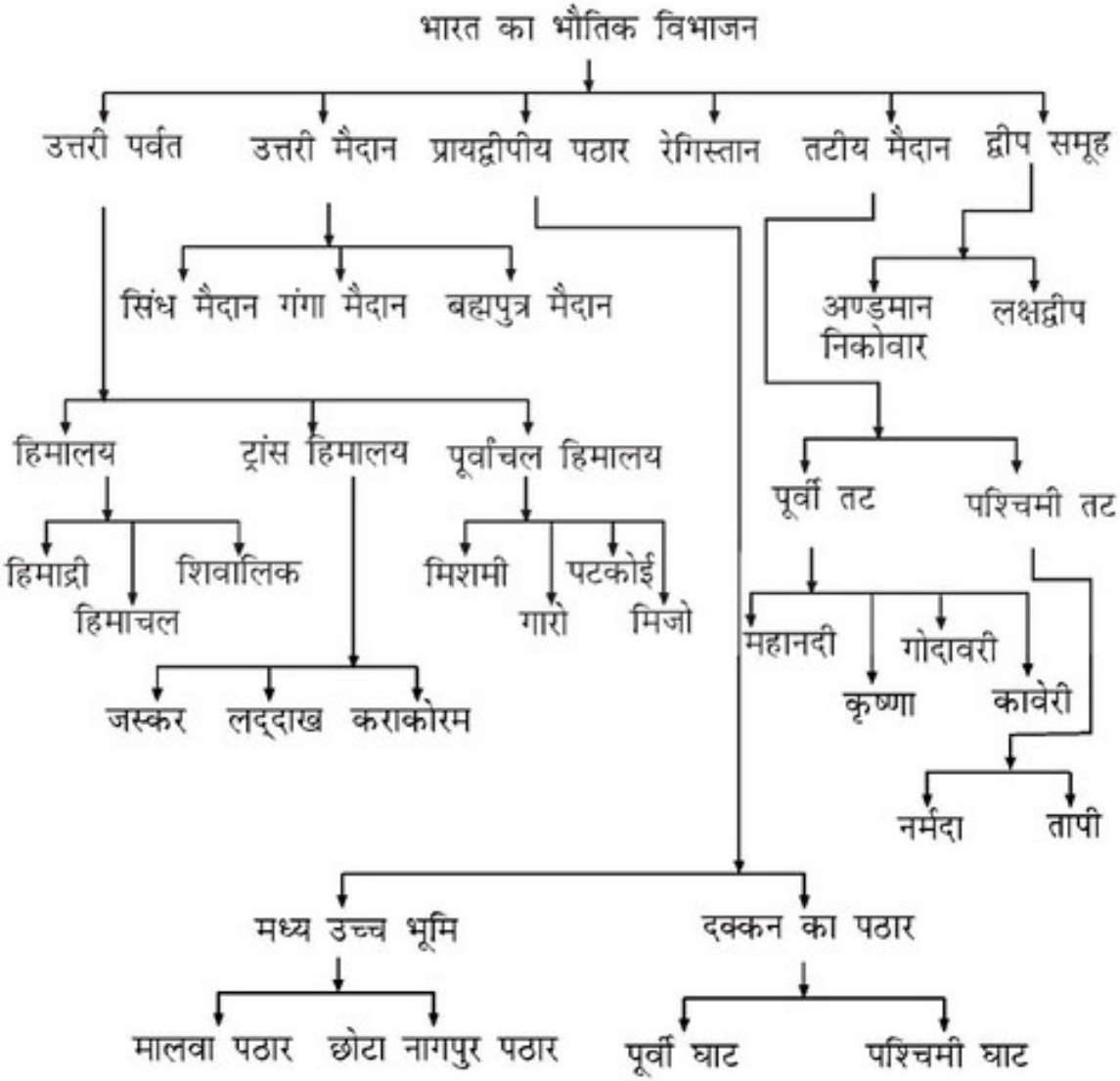
भारत का भौतिक विभाजन
उत्तरी पर्वत
उत्तरी मैदान
प्रायद्वीपीय पठार
रेगिस्तान
तटीय मैदान
द्वीप समूह
सिंध मैदान
गंगा मैदान
ब्रह्मपुत्र मैदान
अण्डमान निकोबार
लक्षद्वीप
हिमालय
ट्रांस हिमालय
पूर्वांचल हिमालय
पूर्वी तट
पश्चिमी तट
हिमाद्री
शिवालिक
हिमाचल
मिशमी
पटकोई
गारो
मिजो
महानदी
गोदावरी
कृष्णा
कावेरी
नर्मदा
तापी
जस्कर
लद्दाख
कराकोरम
मध्य उच्च भूमि
दक्कन का पठार
मालवा पठार
छोटा नागपुर पठार
पूर्वी घाट
पश्चिमी घाट